सं० भ्रो०वि०/हिसार/117-86/32945.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० भ्रादमगुर सहकारी कृषि विकास वैंक समिति, मण्डी श्रादमपुर (हिसार), के श्रमिक श्री भाल सिंह, सुपुत्र श्री वीरवल मार्फत मजदूर एकता यूनियन, नागोरी गेंट, हिसार तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इस में इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक धिकाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिण्ट करना बांछनीय समझते हैं।

इसिलयें, अब, ग्रीचोगिक विवाद अधिनियम, 1947की धारा 10की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों , का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रिधसूचना सं० 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिनियम की धारा 7के ग्रवीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित है:---

क्या श्री भाल सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

## दिनांक 11 सितम्बर, 1986

सं० ग्रो॰वि॰/यमुत्ता/। 30-86/33490.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै॰ पोली प्लास्टिक, ग्रीद्योगिक क्षेत्र, ग्रो/। 5, यमुनानगर, के श्रमिक श्री तेग सिंह, सुपुद्ध श्री भेर सिंह, गांव द डा० कम्यासी, जिला श्रम्याला तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यनाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, ग्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यशाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना स० 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 ग्राप्ति, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित अग न्यायालय, अम्बाला की विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच था तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री तेंग सिंह की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं गैर-हाजिर हो कर नौकरी से पूर्नग्रहणाधिकार (लियन) खोया है ? इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 12 सितम्बर, 1986

संब्योविव /एफर्डा/गुड़गांव/78-86/33609.—चूंकि हरियाणा को राज्यपाल की राये है कि परिवहन ग्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) जनरल मैंनेजर, हरियाणा रोड़वेज, गुड़गांव के श्रमिक श्री विजेन्द्र सिंह, सुपुत्र श्री सोहन सिंह, गांव व डाव पटोदा, तहसील झज्जर, जिला रोहतक तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिये, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20जून, 1978 के साथ पढ़ते हुये श्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रीत गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विश्वादग्रस्त या उससे सुसंगत था उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय एवं पंचाट तीन मात में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच था तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री विजेन्द्र सिंह् की सेवास्त्रों का समापन स्थायोचित तथा ठीका है ? यदि नहीं, तो दह विराधाहरा का हवाराय है ?